International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 03(I), July - September, 2023, pp. 55-59

राजस्थान : मानव अधिवासों के सामाजिक आर्थिक प्रभाव

नन्द सिंह शेखावत*

सार

अधिवास मानव की मूलभूत आवश्यकतों में से प्रमुख है। आदिमानव जब एक जगह रहने की (बसने की) कल्पना करने लगा तो अधिवास निर्माण भी उसके दिमाग में घर करने लगा प्रारम्भ में स्थानीय घास, फूस तथा वृक्षों की टहनियों के सहारे वह अधिवास निर्माण करने लगा। सामूहिक निवास एवं सुरक्षा की भावना ने मानव को प्राकृतिक परिवेश के अनुकुल ऐसी क्रियाएँ करने के लिए प्रेरित किया कि उसके सामूहिक प्रयासों के फलस्वरूप सांस्कृतिक भू–दृश्य का अभ्युदय हुआ। मानव अधिवास इस सास्कृतिक भू–दृश्य के अंग है तथा मानव गृह अधिवास की एक इकाई है। प्रस्तुत प्रपत्र के मानव अधिवासों के क्रमिक विकास एवं उनके मानव के ऊपर सामाजिक आर्थिक प्रभावों की व्याख्या करना है। यदि इस प्रक्रिया के फलस्वरूप मानव का पारिस्थितिकी तत्वों के साथ सामंजस्य अनुकूल रहता है तो स्थल चयन विवेकपूर्ण माना जाता है और वहाँ अधिवासों में निरन्तर वृद्धि होती जाती है। किन्तु स्थल चयन में जरा सी असावधानी से मानव जीवन खतरे में पड़ जाता है।

शब्दकोशः *भू–दृश्य, अधिवास, अध्यासन, पुँजित, संकेन्द्रित, अपखण्डित।*

प्रस्तावना

मानव अधिवास का महत्व भौतिक, आर्थिक एवं सामाजिक के साथ ही शारीरिक दृष्टि से भी होता है। अगर प्राकृतिक पर्यावरण के तत्वों के साथ सामंजस्य पूर्ण इनका निर्माण होता है तो ये वरदान अन्यथा अभिषाप बन जाते है। अधिवास एक दखलकारी इकाई है जो अंग्रेजी भाषा के शब्द सेटलमेण्ट (settlemant) का समानार्थी है। Settlemant उदभव प्राच्य अंग्रेजी के शब्दों Setle (Seat-स्थान) अथवा Setlan to Setlan (to Place या स्थित करना) से माना जा सकता है।

ट्रिवार्थ के अनुसार :– अधिवास शब्द से अभिप्राय अधयासन (Occupance) इकाई में जनसंख्या के विशिष्ट समूहन से है जिसमें निवासियों के लिए मकानों, गलियों आदि की सुविधाएं पायी जाती है। अधिवास भूगोल मानव भूगोल की एक शाखा है। ये मानव जीवन को सुख, सामाजिक महत्व एवं प्रतिष्ठा के साथ ही भौतिक तत्वों तथा अपराधों, चोरी, डकैती, चल सम्पति सुरक्षा आदि प्रदान करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र

राजस्थान राज्य भारत के उतरी पश्चिमी भाग में अवस्थित है। प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र $23^0 3'$ उतरी अक्षांश से $30^0 12'$ उतरी अक्षांश तथा $69^0 30'$ से $78^0 17'$ पूर्वी देशान्तरों के मध्य का क्षेत्र है यह भौतिक भाग राजस्थान राज्य कहलाता है। इसके उतर मे पंजाब उतर–पूर्व में हरियाणा, पश्चिम में पाकिस्तान के मीरपुर, खैरपुर, तथा थारपारकर जिले लगते हैं। दक्षिण–पूर्व में मध्य प्रदेश दक्षिण–पश्चिम में गुजरात राज्य अवस्थित है। भौगौलिक दृष्टि से राजस्थान पूर्व में गंगा–यमुना के मैदानों, दक्षिण में मालवा के पठार तथा उतर एव उतर पूर्व में सतलुज–व्यास नदियों के मैदानो द्वारा घिरा है।

* असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, बी.एन.डी. कॉलेज, नेछवा, सीकर, राजस्थान।

कर्क रेखा राजस्थान की दक्षिणी सीमा को स्पर्श करती हुई निकलती है। इसका आकार विषम कोण चतुर्भुज के समान है। इसकी उतर–दक्षिण लम्बाई 826 कि.मी. तथा पूर्व पश्चिम विस्तार 869 किमी. है। इसका क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग कि.मी. है।

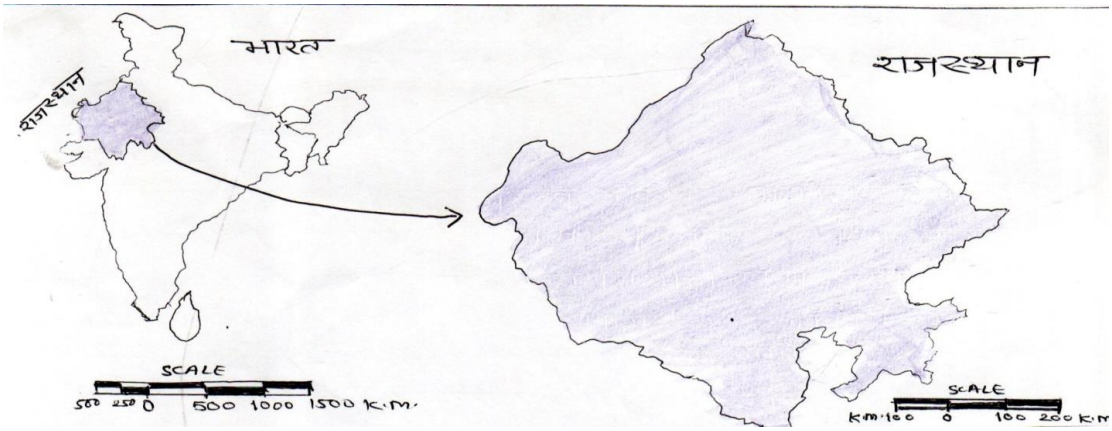

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन राजस्थान के अधिवासों से संबंधित है। अधिवास भौतिक परिस्थतियों से प्रभावित होते है तथा मानव के सामाजिक जीवन, सामाजिक स्तर का आंकलन करते हैं। शोध पत्र का उद्देश्य अधिवासों के वितरण, निर्माण, सामग्री बदलते परिवेश में बदलते प्रारूपों के साथ ही एक दूसरी पीढी का भवन में न रहने के कारणों तथा पारिवारिक विभाजन के कारणों एवं अधिवासों पर प्रभावों का अध्ययन करना है।

मानव के सामाजिक विकास एवं आर्थिक विकास के साथ ही बदलते अधिवास प्रतिरूपों को स्पष्ट करना अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोध पत्र में राजस्थान के अधिवासों में तीव्र गति से बदलते प्रारूप की व्याख्या की गई है। अधिवासों के बदलते स्वरूप के पीछे आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक कारणों के साथ ही भौतिक तत्व के प्रभाव भी अहम भूमिका रखते है।

एस.डी.कौशिक ने कहा है – "मानव अधिवासों को मकानो की पारस्परिक दूरी के आधार पर विभक्त किया जा सकता है।" मानव ने प्राचीनकाल में स्वयं एवं अपने पशुओं तथा भोजन की सुरक्षार्थ ही सघन अधिवास का निर्माण प्रारम्भ किया। एकांकी बस्तियों में सामाजिक संगठन कमजोर होता है। परिणाम स्वरूप सामान एवं स्वयं की सुरक्षा व्यवस्था कमजोर पड़ जाती है।

फिंच एवं ट्रिवार्थ ने ऐसी सघन बस्तियों को न्यष्टित तथा सघन बस्तियाँ, ब्लाश ने पुन्जित बस्तियाँ तथा ब्रुश ने संकेन्द्रित बस्तियाँ कहा हैं।

प्रो. रामलोचन सिंह – "राजस्थान के अधिवास अर्द्ध सघन बस्तियाँ है। "

प्रो.स्पेट – "राज्य अधिवासों को प्रविकीर्ण अधिवास कह सकते है।"

प्रो. आर.एल. सिंह – "राजस्थान के अधिवास पुरवों का अधिवास या अपखण्डित अधिवास है।"

प्रो. विडाल डी ला ब्लाश के अनुसार – "भारत ग्रामीण अधिवास का उतम उदाहरण प्रस्तुत करता है।"

थॉमस(1986) – "अधिवासों के निमार्ण में भौतिक तत्वों में पर्यावरण सामग्री की उपलब्धता प्रभावी है।" मेरे विचारानुसार "अधिवास निर्माण प्रारूप के अनेक कारक है और उनमें सम्मिलित प्रकियाएँ बड़ी जटिल है।"

राज्य की भवन निमार्ण सामग्री को आर्थिक तत्व अधिक प्रभावित करते है। आर्थिक दृष्टि को ध्यान में रखते हुए स्थानीय सामग्री का महत्व गौण हो गया है।

अन्वेषण विधि

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक समंकों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक समंक क्षेत्र सर्वे द्वारा तथा द्वितीयक समंकों को शोध पत्रों, पत्रिकाओं, तथा पुस्तकों द्वारा संकलित किया गया है।

राजस्थान में अधिवास स्थापना के कारक

वातावरण से तात्पर्य उन सभी तथ्यों, दशाओं तथा परिस्थितियों से है जो किसी वस्तु या स्थान के चारों ओर विद्यामान रहते हुए उस वस्तु या स्थान को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। मानव अधिवास वातावरण का ही एक तत्व है जो प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक वातावरण के अन्य तत्वों से बहुत अधिक प्रभावित होता हैं। वातवारण भी एक सक्रिय कारक है जो अधिवासों के प्रकारों तथा प्रतिरूपों को निर्धारित करता है। भौतिक पारितंत्र के कारण ही राजस्थान के कुछ भागों में प्रकीर्णन तथा कुछ में सघनता लिए अधिवास प्रारूप दृष्टिगोचर हो रहे हैं। अधिवास वितरण का यह रूप मानव प्रयत्नों से प्रभावित न हो कर वातावरणीय तत्वों का परिणाम है। राज्य में अधिवासों को अनेक भौतिक एवं सांस्कृतिक तत्व प्रभावित करते हैं। विशेष प्रभाव डालने वाले तत्व इस प्रकार हैः–

प्राकृतिक तत्व

- **स्थिति एवं स्थल**

स्थिति अधिवास की स्थापना को अधिक प्रभावित करती है। उपयुक्त स्थिति पर विकसित अधिवास की उतरोतर वृद्धि होती है। अधिवास परिवहन एवं सुरक्षा से घनिष्ट संबंध रखता है। सुरक्षा एवं परस्पर अभिगम्यता अधिवास स्थापना का सर्वोतम तत्व माना गया है। उदाहरणार्थ कोटा चम्बल नदी के किनारे पर बसा है। स्थिति की दृष्टि से नदी के निकट अधिवास की स्थापना करना उत्तम माना जाता है परन्तु स्थल की दृष्टि से नदी के किनारे अधिवास के लिए उपयुक्त नहीं हो सकते। राज्य के सभी प्राचीन किले दुर्ग एवं गढ पहाड़ी क्षेत्रों में उच्च शिखरों पर तो समतल क्षेत्रों में आसपास की उच्च भूमि पर निर्मित किये गये है।

- **स्थलाकृति**

स्थलाकृति या धरातलीय रूप भी अधिवासों को प्रभावित करता है। पर्वतीय ढाल तथा पठार की कटी फटी भूमि पर प्रविकीर्ण अधिवास पाये जाते हैं। राज्य के दक्षिणि–पूर्वी भाग में सघन अधिवास मिलते है। जबकि दक्षिणी राजस्थान के पठारी प्रदेश में अपखण्डित अधिवास दृष्टिगत होते है। एवं जीविकोपार्जन साधनों के अभाव में पर्वतीय क्षेत्रों में छोटे एवं कम दूरी पर जबकि मैदानों में सघन अधिवास पाये जाते है।

- **जलवायु**

मानवीय अधिवास की स्थिति एवं स्थान निर्धारण में जलवायु का अकथनीय योगदान है। पश्चिम राजस्थान के मरूभूमि क्षेत्रों में विषम, कठोर एवं शुष्क जलवायु के कारण विरल अधिवास तथा कम जनघनत्व है उदाहरणार्थ राजस्थान के जैसलमेर के अधिवास।

- **जल एवं समतलभूमि**

जलाभाव वाले मरू क्षेत्र में प्राचीन समय में तालाब के चारो और गाँव बसते थे तथा तालाब को "सर" के नाम से जाना जाता था इसी आधार पर गाँवों को भी सर जोड़ कर बोलते थे जैसे – मौलासर, सालासर, बाढसर, भोजासर, शोभासर, नापासर, लूणकरणसर, रावतसर, माणकसर, कोडासर, मालासर आदि। प्राचीन राज्य की सभ्यताएँ भी जैसे कालीबंगा, पीलीबंगा, आहड़, बैराठ, गणेश्वर भी नदियों के किनारे ही विकसित हुई। बनास, बेड़च, मेनाल, गम्भीरी, चम्बल तथा माही नदियों के किनारे पेयजल की प्राप्ति के कारण ही सघन अधिवास पाये जाते हैं। कृषि एवं पशृपालन की दृष्टि से समतल भूमि अधिवास निर्माण हेतु उपयूक्त मानी जाती रहीं है। अतः समतल भूमि पर सघन अधिवास निर्माण की उपयूक्त स्थिति होती है।

- **मिट्टी**

मृदा के प्रकार तथा मृदा उर्वरता अधिवासों की स्थिति एवं आकार को प्रभावित करते है। समतल सतह हो तथा उस पर उर्वर मृदा का निक्षेप हो तो दोनो घटक सघन अधिवासों को जन्म देते हैं। अलवर, भरतपुर, डूँगरपूर, बासवाड़ा, (माही क्षेत्र) दोसा, करौली (डांग क्षेत्र को छोड़कर) की मृदा उपजाऊ है। अतः यहाँ सघन अधिवास पाये जात है।

- **आर्थिक एवं सामाजिक कारक**

मानव अपने भरण पोषण हेतु विविध आर्थिक क्रियाएँ करता है। जैसे – शिकार, लकड़ी काटना, पशुचारण, खनन आदि परन्तु इनके संदर्भ मे अधिवासों पर नजर डाले तो ऐसी क्रियाओं में सलग्न व्यक्तियों के अधिवास अस्थायी एव छोटे दृष्टिगत होते हैं। इनकी प्रवृति स्थानान्तरित की होती हैं। बाह्य संस्कृति से सम्पर्क, आय में वृद्धि,सरकारी सेवा, महिला शिक्षा के प्रभाव के कारण एंकाकी जीवन जीने की प्रवृति ने भी अधिवासों को प्रभावित किया है। समाज मे बढती बालिका शिक्षा एवं बालकों की बढती शादी की उम्र भी अधिवासों में परिवर्तन का प्रमुख कारण है। लोग साहूकारों, व्यापारियों एवं बैंकों के पास सोना चाँदी, कृषि भूमि गिरवी रख कर भी बढती उम्र के बालकों की शादि के लिए अधिवासों की चकाचौंध में लग्जरी गाड़ियों की तथा रेडिमेड कपड़ों की झूठी शान–शौकत दिखाकर लडकी पक्ष को भ्रमित करने के लिए भी अधिवासों के निमार्ण पर अपनी हैसियत से अधिक खर्च करते देखे जाते है।

इनके विपरित द्वितीयक आर्थिक क्रियाओं में सलग्न व्यक्तियों के अधिवास स्थायी होते है। ये अधिवास परिवहन, जलापूर्ति, केन्द्रीयता तथा बाजार प्रभावित होते है। जहाँ कृषि योग्य भूमि, खनिज, उद्योग, व्यापार, यातायात, शिक्षा, चिकित्सा सुविधाएँ हो वहाँ स्वतः अधिवास पनप जाते हैं। प्राचीन काल में सरदारशहर रतनगढ किशनगढ आदि यातायात मार्गों पर स्थिति के कारण और मकराना (नागौर) रियासत कालीन छोटा गाँव था जो खनिज पत्थर (संगमरमर) के कारण शहरों में बदल गये है। कृषि उत्पादन के कारण 1920 के आसपास एक ढाणी वाला रामसर इंदिरा गाँधी नहर की सिचाई के कारण आज गंगानगर का 1 लाख से अधिक आबादी वाला शहर बन गया है। खेतड़ी, देबारी, साभंर, कुचामन, डीडवाना का विकास खनिजो के कारण तो बांदीकुई, फुलेरा, उतरलाई, गंगापुर, कोटपुतली, शाहपुरा, निवाई का विकास यातायात साधनों द्वारा हुआ है।

सांस्कृतिक कारक

आदिकालीन मानव प्राथमिक क्रियाओं में सलग्न रहता था। परिणाम स्वरूप पुरूष अधिवासों से बाहर तथा स्त्रियां घर पर काम करती थी फलस्वरूप एक सहयोगी जीवन या सहकारिता की भावना विकसित होती गयी और अधिवासों में एक प्रकार का कार्य सम्पन्न करने वाले लोगों का समूह एक साथ रहने लगा। यही संस्कृति वर्तमान में भी साधारणतः ग्रामीण अधिवासों में दृष्टि गत होती है जैसे– एक विशेष संस्कृति के लोग एक साथ एक ही मोहल्ले में निवास करते हैं उदाहरणार्थ– बढई, कारीगर, खाती, जुलाहा, कुम्हार, नाई, हरिजन आदि। ग्रामीण अधिवासों नंगला, पुरवा ढाणियों में यह कारक सक्रिय रहते हुए प्रभावित करता है। और एक ही स्थान पर विभिन्न कार्यों से संबंधित व्यक्तियों के सामूहिक घर मिल जात है। और इसी कारण अधिवासों का निर्माण संभव हो सका।

ग्रामिण अधिवासों की समस्याएँ

- आवागमन के साधनों की समस्याएँ
- स्वच्छ पयेजल का अभाव
- स्वास्थ्य सेवाओ का अभाव
- विद्युत आपूर्ति का अभाव
- रोजगार के अवसरों की समस्या
- सूचना तकनीकी का अभाव
- उच्च एवं तकनीकी शिक्षण संस्थानों का अभाव

निष्कर्ष

"मेरा अधिवास है वहाँ, गति मेरी रूकती है जहाँ।" सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की यह पंक्ति अधिवास को इंगित करती है। अधिवास मानव का स्थायी निवास स्थान जहाँ वह अपने आप को प्राकृतिक जैविक कारकों से सुरक्षित समझता है। अधिवास निमार्ण की प्रकृति स्थानीय निर्माण सामग्री की उपलब्धता से प्रभावित परिक्षित होती है राजस्थान में रैबारी, गाडरी, बन्जारे, बावरिये, सपेरा, कालबेलिया जैसी अनेक जातियाँ अस्थियी अधिवासों में निवास करती है। शेष कृषक, पशुपालक, व्यापारी वर्ग स्थायी अधिवास बनाकर रहते हैं उनमें एक पीढी में आसानी से जीवन यापन कर सकती है। दूसरी पीढी की निर्माण में भूमिका है तो निवास कर सकती है अन्यथा वह दूसरे घर का निमार्ण करके रहती है। पीढी परिवर्तन के साथ अधिवासों की रचना सामग्री, प्रतिरूप, प्रारूप, आकार, संरचना आदि में परिवर्तन होने लगते है जो लोग अपने मूल निवास (अधिवास) को छोड़कर बाहर (दूर) चले जाते है उनकी आगामी पीढियां अधिक विकास करती है तथा नहीं छोडनें वाले लोग धीरे धीरे आर्थिक संकटों से जकड़ने लगते है क्योकि जो लोग बाहर जायेगें उन्हे भौतिक, सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं से रूबरू होना पड़ेगा तथा वे उनका समाधान करने में अग्रसर होकर आर्थिक विकास की ओर अग्रसर होने लगेगें परन्तु स्थायी अधिवासिंयों में ऐसा नहीं होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Verma, Laxminarayan.,- अधिवास भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
2. Houston, J.M., (1952) A Social Geography of Europe. p.80
3. Blache, P. vidal de la., (1926) Principles of Human Geography. p.271
4. Brunhes, J.La.,(1910) Geographie Humaine Paris.
5. Finch, V.C. & Trewartha, G.T., Element of Geography, Mc Graw hill New York.
6. Houston, F.S., (1970) A Geography of settlements Macdonald& Evans London. p. 48-49
7. Money, D.c.,(1964) Introducation to Human Geography. (Univ.tut.press London)p.92
8. Dickinson, R.E.,(1949) Rural settlemant in German lands A.A.A.G. vol.39. p.239
9. Stamp, L.D.,(1964) the common Land & village greens of England & Wales. p.130
10. Thorpe, H.,(1950) some aspects of rural settlement in county durham Geography.
11. Singh, Sarveshwar nath., (2010) Population & domicile Geography Radha Publication delhi.
12. Joshi, Ratan.,(2020) Urban Geography, Rajasthan Hindi Granth Academy.
13. Agrwal, L.C., (2023) Human Geography, Rajasthan Hindi Granth Academy
14. Singh, Kashinath., & Singh, Jagdish.,(2009) Human Geography Radha Publication Delhi.
15. Maurya, S.D.,(2022) Cultural Geography, Sarda Pustak Bhawan Prayagraj.
16. Bhalla, L.R., (2015) Geography of Rajasthan, Kuldeep Publication Jaipur.
17. Singh, Virendra., & Gautam Alka., (2017) Geography of India, Rastogi Publication merut.

❖◆❖